अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : प्रथम – जैन धर्म परिचय (परीक्षा 17 जुलाई, 2022)

उत्तरतालिका

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- **15x1 = (15)**

(a) जिन के उपासक कहलाते हैं-
(क) जैन (ख) बौद्ध
(ग) साधु (घ) श्रावक (क)

(b) हमारे देव कितने प्रकार के हैं-
(क) एक (ख) दो
(ग) तीन (घ) चार (ख)

(c) जैन धर्म है-
(क) व्यक्तिपूजक (ख) गुणपूजक
(ग) धर्मपूजक (घ) ईश्वरपूजक (ख)

(d) शब्द के अन्त में अनुस्वार (ं)आने पर उसका उच्चारण होगा-
(क) म् (ख) ञ्
(ग) न् (घ) ण् (क)

(e) जैन साधुओं के महाव्रत होते हैं-
(क) चार (ख) पाँच
(ग) छः (घ) तीन (ख)

(f) आत्मा का स्वभाव है -
(क) क्रोध (ख) मान
(ग) माया (घ) सम्यक् ज्ञान (घ)

(g) निम्न में से दीर्घ स्वर है-
(क) अ (ख) आ
(ग) उ (घ) इ (ख)

(h) समभाव की साधना को कहते हैं-
(क) सामायिक (ख) संवर
(ग) पौषध (घ) दया (क)

(i) एक सामायिक का कम से कम समय होता है-
(क) 52 मिनट (ख) 48 मिनट
(ग) 60 मिनट (घ) 45 मिनट (ख)

(j) कायोत्सर्ग शुद्धि के पाठ से किस ध्यान की आलोचना की जाती है-
(क) आर्त्तध्यान (ख) धर्मध्यान
(ग) शुक्लध्यान (घ) आत्मध्यान (क)

(k) सातवें बोल में शरीर के भेद बताये गये हैं-
(क) 04 (ख) 07
(ग) 05 (घ) 02 (ग)

(l) दसवाँ बोल है-
(क) प्राण दस (ख) इन्द्रिय पाँच
(ग) काय छह (घ) कर्म आठ (घ)

(m) भगवान महावीर स्वामी की पत्नी का नाम था-
(क) मंगला (ख) सुन्दरा
(ग) त्रिशला (घ) यशोदा (घ)

(n) 'महावीर स्तुति' के रचयिता हैं-
(क) केवल मुनि (ख) दर्शन मुनि
(ग) अशोक मुनि (घ) प्रमोद मुनि (ख)

(o) 16वें तीर्थंकर हैं -
(क) श्री चन्द्रप्रभजी (ख) श्री अरनाथजी
(ग) श्री शान्तिनाथजी (घ) श्री पार्श्वनाथजी (ग)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- **15x1=(15)**

(a) आत्मा ही सुख-दुःख का कर्त्ता और विकर्त्ता है। (हाँ)

(b) जैन धर्म गुणपूजक धर्म है, शरीर व वेशपूजक नहीं। (हाँ)

(c) जगत की आदि और अन्त है। (नहीं)

(d) प्राकृत भाषा में 'औ' अक्षर नहीं होता है। (हाँ)

(e) तिक्खुत्तो के पाठ को गुरु वन्दन सूत्र भी कहते हैं। (हाँ)

(f) मन के 12 दोष होते हैं। (नहीं)

(g) सामायिक व्रत ग्रहण करते समय इच्छाकारेणं सूत्र का काउस्सग्ग किया जाता है। (हाँ)

(h) अनुकूल वस्तु पाकर प्रसन्न होना 'राग' कहलाता है। (हाँ)

(I) मिथ्यात्व गुणस्थान पहला गुणस्थान है। (हाँ)

(j) आठवें बोल में मन के सात भेद बताये गये हैं। (नहीं)

(k) भगवान महावीर ने 30 वर्ष की आयु में श्रमण धर्म अंगीकार किया। (हाँ)

(l) भगवान महावीर के ज्येष्ठ भ्राता नन्दीवर्धन थे। (हाँ)

(m) ''नवकार मन्त्र है महामंत्र'' प्रार्थना में पंचपरमेष्ठी की स्तुति की गई है। (हाँ)

(n) अभिगम के पाँच भेद हैं। (हाँ)

(o) वेश्यागमन मानव जीवन का भयंकर कोढ़ है। (हाँ)

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से सही जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्तस्थान में लिखिए:- **15x1=(15)**

(a)	अरिहंत, सिद्ध	(क) गुरु	देव
(b)	क्रोध, मान, माया	(ख) 20	आन्तरिक शत्रु
(c)	अहिंसा	(ग) वर्द्धमान	महाव्रत
(d)	आचार्य, उपाध्याय	(घ) 10	गुरु
(e)	धर्म	(च) महाव्रत	कर्त्तव्य
(f)	विहरमान	(छ) 3	20
(g)	समाप्ति सूत्र	(ज) 9	एयस्स नवमस्स
(h)	वचन दोष	(झ) कर्त्तव्य	10
(i)	अज्ञान	(य) 8	3
(j)	स्पर्शनेन्द्रिय के विषय	(र) पावापुरी	8
(k)	त्रिशलानन्दन	(ल) देव	वर्द्धमान
(l)	अंतिम चातुर्मास	(व) एयस्स नवमस्स	पावापुरी
(m)	महावीर स्तुति	(क्ष) आन्तरिक शत्रु	श्री दर्शनमुनि जी
(n)	श्री सुविधिनाथजी	(त्र) 7	9
(o)	व्यसन	(ज्ञ) श्री दर्शनमुनि जी	7

प्र.4 मुझे पहचानो :- **15x1=(15)**

(a)	मैं विश्व का महान धर्म हूँ।	जैन धर्म
(b)	मैं ज्ञान-दर्शन गुण से सम्पन्न शाश्वत तत्त्व हूँ।	आत्मा
(c)	मेरा उच्चारण जोर देकर किया जाता है।	दीर्घ स्वर
(d)	मेरा दूसरा नाम श्रावक धर्म है।	अगार धर्म

(e) मेरा उद्देश्य शान्त चित्त की अवस्था का विकास करना है। सामायिक

(f) मेरे द्वारा 24 तीर्थंकर की स्तुति की जाती है। लोगस्स का पाठ/चतुर्विंशतिस्तव

(g) मैं सामायिक लेने का पाठ हूँ। करेमि भंते

(h) मेरे 12 दोष हैं। काया

(I) मैं सातवाँ गुणस्थान हूँ। अप्रमादी साधु गुणस्थान

(j) तीखा, कड़वा, कषैला, खट्टा और मीठा मेरे विषय हैं। रसनेन्द्रिय

(k) मैने रात्रि में 14 मंगलकारी शुभ स्वप्न देखें। महारानी त्रिशला

(l) मैं भगवान महावीर की प्रथम शिष्या थी। चन्दनबाला

(m) '' हो लाख बार प्रणाम तुम्हें'' यह वाक्य मेरी स्तुति में आया है। महावीर स्तुति

(n) मैं एक ऐसा अभिगम हूँ, जिसका उपयोग गुरु के समक्ष बोलते समय किया जाता है। उत्तरासंग-धारण

(o) मेरा सेवन करने से मानव मदहोश हो जाता है। मदिरापान

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्यों में उत्तर दीजिए- **8x2=(16)**

(a) गुरु किसे कहते हैं ?

उ. मानव में रहे हुए अज्ञान अंधकार को दूर कर ज्ञान का प्रकाश फैलाने वाले महापुरुष को गुरु कहते हैं।

(b) अणगार धर्म क्या है ?

उ. पाँच महाव्रत के पालन रूप सर्वविरति चारित्र को अणगार धर्म कहते हैं।

(c) नौवें बोल के बारह भेदों में से तीसरे, आठवें तथा ग्यारहवें भेद का नाम लिखिए।

उ. अवधि ज्ञान, विभंगज्ञान, अवधिदर्शन

(d) घ्राणेन्द्रिय के विषय एवं विकार लिखिए।

उ. घ्राणेन्द्रिय के दो विषयों के 12 विकार- सुरभिगन्ध और दुरभिगन्ध। ये 2 सचित्त, 2 अचित्त और 2 मिश्र। इन 6 पर राग और 6 पर द्वेष। इस प्रकार 12 विकार।

(e) 25 बोल में से पाँचवें बोल के भेदों के नाम लिखिए।

उ. 1. आहार पर्याप्ति, 2. शरीर पर्याप्ति, 3. इन्द्रिय पर्याप्ति, 4. श्वासोच्छ्वास पर्याप्ति, 5. भाषा पर्याप्ति, 6. मन पर्याप्ति।

(f) चार विकथाओं के नाम लिखिए।

उ. स्त्री-कथा, भत्त-कथा, देश-कथा, राज-कथा

(g) भगवान महावीर के शासन में कितने साधु एवं साध्वियों ने मोक्ष प्राप्त किया ?

उ. 700 साधुओं और 1400 साध्वियों ने मोक्ष प्राप्त किया।

(h) लोकोपचार विनय क्या है ?

उ. गुरुजन, माता, पिता एवं गुणवानों के आने पर खड़ा होना, अभिवादन करना, उनकी आज्ञा का पालन करना तथा उनके सामने शिष्ट आचरण करना 'लोकोपचार विनय' है।

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर दो-तीन पंक्तियों में लिखिए : - **8x3=(24)**

(a) क्या अरिहन्त हमें सुखी व दुःखी बना सकते हैं ?

उ. अरिहंत हमें सुखी अथवा दुःखी नहीं बना सकते हैं, लेकिन वीतराग प्रभु की साधना से, भक्ति से हमारे विकार (राग, द्वेष) कम होते हैं, जिससे हम स्वतः सुख व शान्ति का अनुभव करते हैं।

(b) हमारे गुरु की कोई तीन विशेषताएँ पाठ्य पुस्तक के आधार पर लिखिए।

उ. नोटः इनमें से कोई तीन मान्य

1. पंच महाव्रतों का निरतिचार पालन करते हैं।

2. 5 समिति 3 गुप्ति का आराधन करते हैं।

3. आत्मा से परमात्मा बनने के लक्ष्य को सामने रखकर विशुद्ध आचार एवं विचार से उस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील रहते हैं।

4. रात्रि में अन्न एवं जल न तो ग्रहण करते हैं और न रखते हैं।

5. दूर-देश में पैदल विहार कर धर्मोपदेश देते हैं।

6. किसी भी प्रकार का नशा नहीं करते हैं।

7. रुपया-पैसा या मठ-मन्दिर आदि कोई सम्पत्ति नहीं रखते हैं।

8. आग, पानी (कच्चा) एवं हरी सब्जी आदि को स्पर्श नहीं करते हैं।

9. पंखा, कूलर, विद्युत् इत्यादि का प्रयोग नहीं करते हैं।

(c) शुद्ध उच्चारण करना क्यों आवश्यक है ?

उ. अशुद्ध उच्चारण करने से शब्द का अर्थ ही बदल जाता है, कभी-कभी विपरीत अर्थ भी हो जाता है। अशुद्ध उच्चारण करने से हीनाक्षर-अधिकाक्षर अर्थात् शब्द, अक्षर, मात्रा, अनुस्वार आदि कम अधिक बोलने से ज्ञान का अतिचार (दोष) लगता है। अतः शुद्ध उच्चारण करना आवश्यक है।

(d) सामायिक लेने का मूल पाठ लिखिए।

उ. करेमि भंते !
सामाइयं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि।
जावनियमं पज्जुवासामि दुविहं तिविहेणं
ण करेमि, ण कारवेमि, मणसा, वयसा, कायसा,
तस्स भंते ! पडिक्कमामि, निंदामि,
गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि।

(e) आठवें बोल के 15 भेदों में से काया के 7 भेदों के नाम लिखिए।

उ. औदारिक, औदारिक मिश्र, वैक्रिय, वैक्रिय मिश्र, आहारक, आहारक मिश्र और कार्मण काय योग।

(f) अहो भगवन्! जीव संयत है, असंयत है या संयतासंयत है ? स्पष्ट कीजिए।

उ. पाठ्य पुस्तक के बाहर का प्रश्न होने से बौनस अंक दिया जाय।

(g) ''श्रीपाल.....मंगलकारी है।'' रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए।

उ. श्रीपाल सुदर्शन मयणरेहा, जिसने भी जपा आनन्द पाया ।
जीवन के सूने पतझड़ में, फिर फूल खिले सौरभ छाया ।।
मन नन्दन वन में रमण करें, यह ऐसा मंगलकारी है ।।3।।

(h) ''जो पाप.....गामी की।'' प्रार्थना को पूर्ण कीजिए।

उ. जो पाप मिटाने आया था, जिस भारत आन जगाया था ।उस त्रिशला नन्दन ज्ञानी की- जय.....
हो लाख बार प्रणाम तुम्हें, हे वीर प्रभु ! भगवान् तुम्हें । 'मुनि दर्शन' मुक्ति-गामी की- जय....।।

कक्षा : प्रथम – जैन धर्म परिचय (परीक्षा 16 जुलाई, 2017)

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- **10x1 = (10)**

(a) हमारे गुरु हैं-

(क) अरिहंत (ख) सिद्ध

(ग) आचार्य, उपाध्याय, साधु (घ) इनमें से कोई नहीं (ग)

(b) सामायिक में मन के दोष हैं -

(क) 10 (ख) 12

(ग) 32 (घ) इनमें से कोई नहीं (क)

(c) सामायिक में त्याग किया जाता है -

(क) निरवद्य योग का (ख) सावद्य योग का

(ग) सावद्य, निरवद्य योग का (घ) इनमें से कोई नहीं (ख)

(d) जिस अक्षर पर अनुस्वार (.) है, उसके आगे 'व' होने पर अनुस्वार का उच्चारण करेंगे-

(क) ञ् (ख) ण्

(ग) म् (घ) ड्. (ग)

(e) आठवाँ बोल है-

(क) योग पन्द्रह (ख) कर्म आठ

(ग) शरीर पाँच (घ) मिथ्यात्व दस (क)

(f) स्पशनेन्द्रिय के विषय हैं-

(क) 05 (ख) 23

(ग) 08 (घ) 03 (ग)

(g) साहरण की रात्रि में माता त्रिशला ने स्वप्न देखे-

(क) 10 (ख) 14

(ग) 07 (घ) 09 (ख)

(h) 'महावीर स्तुति' प्रार्थना के रचयिता है -

(क) अशोक मुनि (ख) दर्शन मुनि

(ग) गौतम मुनि (घ) महेन्द्र मुनि (ख)

(i) ग्यारहवें तीर्थंकर का नाम है-

(क) वासुपूज्यजी (ख) अनन्तनाथजी

(ग) श्रेयांसनाथजी (घ) शीतलनाथजी (ग)

(j) विनय जिसका मूल है, वह है -

(क) गुरु कृपा (ख)धर्म

(ग) ज्ञान (घ) मान (ख)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- **10x1=(10)**

(a) घाती कर्मों को क्षय कर अरिहंत बन सकते हैं। (हाँ)

(b) प्राकृत भाषा में ऋ अक्षर होता है। (नहीं)

(c) इच्छाकारेणं का पाठ आलोचना सूत्र है। (हाँ)

(d) अनुस्वार के आगे'स' होने पर अनुस्वार (.) का उच्चारण 'न' करेंगे। (हा)

(e) पाँचवा बोल प्राण दस होता है। (नहीं)

(f) मोक्ष के मार्ग को संसार का मार्ग श्रद्धे तो मिथ्यात्व। (हाँ)

(g) माता-पिता के स्वर्गवास के समय महावीर की आयु 30 वर्ष थी। (नहीं)

(h) श्री शांतिनाथजी 14वें तीर्थंकर थे। (नहीं)

(i) गुरु भगवंतों के समक्ष खुले मुहँ नहीं बोलना उत्तरासंग धारण है। (हाँ)

(j) व्यसन जीवन के सर्वनाशक हैं। (हाँ)

प्र.3 मुझे पहचानो :- **10x1=(10)**

(a) मेरे द्वारा चतुर्विध संघ रूप धर्म तीर्थ की स्थापना की गई। तीर्थंकर

(b) मैं सामायिक ग्रहण करने का पाठ हूँ। करेमि भंते/सामायिक प्रतिज्ञा सूत्र

(c) मैं कायोत्सर्ग प्रतिज्ञा का पाठ हूँ। आत्मशुद्धि का पाठ/उत्तरीकरण सूत्र/ तस्स उत्तरी का पाठ

(d) मैं सभी मंगलों में पहला मंगल हूँ। नवकार मंत्र

(e) मैं पच्चीस बोल का तेरहवां बोल हूँ। मिथ्यात्व के दस भेद

(f) मैने भगवान महावीर का अभिग्रह पूरा किया। चन्दनबाला

(g) मैं पाप को मिटाने तथा भारत देश को जगाने आया था। भगवान महावीर

(h) मैं 21वाँ तीर्थंकर हूँ। नमिनाथजी

(i) मैं पाँच अभिगम में पहला अभिगम हूँ। सचित्त का त्याग

(j) मैं एक ऐसा कुव्यसन हूँ जो मानव जीवन का भयंकर कोढ़ के रूप में जाना जाता हूँ। वैश्यागमन

प्र.4 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो पंक्तियों में दीजिए। 14x2 = (28)

(a) **अणगार धर्म कसे कहते हैं ?**

उ- **पाँच महाव्रतों के पालन रूप सर्वविरति चारित्र को अणगार धर्म कहते हैं।**

(b) **उच्चारण शुद्धि के कोई दो नियम लिखिए।**

उ- **दीर्घ स्वर व दीर्घ स्वर की मात्रा वाले अक्षरों का उच्चारण में जोर देकर बोला जावे व ह्रस्व स्वर व ह्रस्व मात्रा वाले अक्षरों को बिना जोर दिये बोला जावे। इक्षु- ईख। उष्ट्र-ऊँट। पिटना-पीटना। कुल-कूल। किला-कीला। किट-कीट।**

शब्द के प्रारम्भ में आधा अक्षर आवे तो उसके पहले वाले अक्षर पर जोर दिया जावे। जैसे स्तवन में 'त' पर।

शब्द के बीच में आधा अक्षर आवे तो उसके पहले वाले अक्षर पर जोर देकर बोला जावे। जैसे - कल्प में 'क' पर जोर देकर बोलें। उज्जोयगरे में उज्‌ जोयगरे 'उ' पर जोर देना चाहिए।

(c) **भगवान महावीर ने कौनसे धर्म की प्ररूपणा की ?**

उ- **अणगार धर्म एवं अगार धर्म की।**

(d) **जैन धर्म का प्राण किसे कहा गया है ?**

उ- **अहिंसा, अनेकान्त, अपरिग्रह, समता एवं वीतरागता को।**

(e) **सामायिक में कितने प्रकार के दोष लगते हैं ?**

उ- **दस मन के, दस वचन के, 12 काया के। इस प्रकार 32 दोष लगते हैं।**

(f) **सामायिक ग्रहण करने का पाठ लिखिए।**

उ- करेमि भंते!
सामाइयं, सावज्जं जोग पच्चक्खामि।
जावनियमं पज्जुवासामि दुविहं तिविहेणं
ण करेमि, ण कारवेमि, मणसा, वयसा, कायसा,
तस्स भंते! पडिक्कमामि, निंदामि,
गरिहामि, अप्पाणं वोसिराम।

(g) **पाँच जाति के नाम लिखिए।**

उ- **एकेन्द्रिय, बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चौरेन्द्रिय,पंचेन्द्रिय**

(h) **नौवें बोल के आधार पर पाँच ज्ञान के नाम लिखिए।**

उ- **1. मतिज्ञान 2. श्रुतज्ञान 3.अवधिज्ञान 4.मनःपर्याय ज्ञान 5.केवलज्ञान।**

(i) **चक्षुरिन्द्रिय के पाँच विषयों के नाम लिखिए।**

उ- **काला, नीला, लाल, पीला, सफेद।**

(j) **केवल ज्ञान प्राप्त होने पर भगवान महावीर की पहली शिष्या कौन बनी ?**

उ- **चन्दनबाला**

(k) **रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए-**

उ- 'अरिहंताणं' पद पहला है, अरि आरति दूर भगाता है।

सिद्धाणं सुमिरण करने से, मनवांछित सिद्धि पाता है।

(l) **रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए-**

उ- जिस जगती का उद्धार किया, जो आया शरण उसे पार किया।

(m) **ज्ञान विनय किसे कहते हैं ?**

उ- ज्ञान विनय- श्रद्धापूर्वक जैनागमों का स्वाध्याय एवं चिंतन-मनन करना 'ज्ञान विनय' है।

(n) **मांस भक्षण से क्या हानि होती हैं ?**

उ- मस भक्षण- यह निर्दयता व पशुता की सबसे बड़ी निशानी है। मांस, मछली, अण्डे आदि मांसाहारी पदार्थों का सेवन करना 'मांस भक्षण' है। मनुष्य जीभ के स्वाद के लिए बेचारे मूक व निरीह प्राणियों की हत्या करके मांस का सेवन करता है। सभी को अपने प्राण प्यारे होते हैं। प्राणियों की हत्या करना महापाप है।

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में लिखिए : - **14x3 = (42)**

(a) **हम अरिहन्तों को आराध्यदेव क्यों मानते हैं ?**

उ- हमारा लक्ष्य अनंत सुख को प्राप्त करना है, अतः हमारा आर्दश भी अनंत सुखों में लीन परमात्मा होना चाहिये। अरिहंत भगवान् अनंत ज्ञान, अनंत दर्शन, अनन्त चारित्र और अनन्त बलवीर्य के धारक होते हैं। इसलिए हम अरिहन्तों को आराध्य देव मानते हैं।

(b) **गुरु किसे कहते हैं, गुरु हमें क्या देते हैं ?**

उ- मानव -मन में रहे हुए अज्ञान अंधकार को दूर कर ज्ञान का प्रकाश फैलाने वाले महापुरुष को गुरु कहते हैं।

(c) **जैन साधुओं द्वारा पालन करने योग्य प्रथम तीन महाव्रतों को समझाइए।**

उ- 1. अंहिसा- मन, वचन एवं शरीर से छोटे या बड़े, त्रस या स्थावर किसी भी प्रकार के जीव की हिंसा न करना, न करवाना, तथा न करने वाले का समर्थन करना।
2. सत्य-मन, वचन व काया से न झूठ बोलना, न बुलवाना, न बोलने वाले का समर्थन करना।
3. अचौर्य- मन, वचन एवं शरीर से न चोरी करना, न करवाना न करने वालों का समर्थन करना।

(d) **श्रद्धा एवं पालन करने की अपेक्षा से जैन कितने प्रकार के होते हैं ?**

उ- जैन तीन प्रकार के होते हैं- 1. जिन वचनों पर श्रद्धा रखने वाले। 2.श्रद्धा के साथ आंशिक नियमों का पालन करने वाले। 3.श्रद्धा के साथ पूर्ण चारित्र का पालन करने वाले।

(e) **विहरमान किसे कहते हैं, ये वर्तमान में कितने हैं ?**

उ- जो अरिहंत भगवान तीर्थंकर के रूप में महाविदेह क्षेत्र में विचरण करते हैं वे विरहमान कहलाते हैं। ये वर्तमान में 20 हैं जो श्री सीमन्धरस्वामीजी, युगमन्धरस्वामीजी आदि के नाम से जाने जाते हैं।

(f) **इरियावहियं .....संताणा संकमणे। रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए।**

उ- इरियावहियं पडिक्कमामि, इच्छं इच्छामि

पडिक्कमिउं इरियावहियाए विराहणाए, गमणागमणे,

पाणक्कमणे, बीयक्कमणे, हरियक्कमणे,

ओसा उत्तिंग पणग दग मट्टी मक्कडा संताणा संकमणे।

(g) **अप्पडिहय.....जिअभयाणं। रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए।**

उ- अप्पडिहय-वरनाण-दंसणधराणं विअट्टछउमाणं, जिणाणं, जावयाणं,

तिण्णाणं, तारयाणं, बुद्धाणं, बोहयाणं, मुत्ताणं, मोयगाणं,सव्वण्णूणं

सव्वदरिसीणं, सिव-मयल-मरुअ-मणंत-मक्खय-मव्वाबाह-मपुणरावित्ति

सिद्धिगइनामधेयं ठाणं संपताणं णमो जिणाणं जिअभयाणं।

(h) **रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए-**

उ- कित्तिय वंदिय महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा।

आरूग्ग बोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु।।

चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा

सागरवर गंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु।।

(I) **पन्द्रह योगों के नाम लिखिए।**

उ- आठवें बोले योग पन्द्रह- (चार मन के)1 सत्य मनोयोग, 2 असत्य मनोयोग, 3 मिश्र मनोयोग, 4 व्यवहार मनोयोग। (चार वचन के) 5.सत्य भाषा, 6 असत्य भाषा, 7 मिश्र भाषा, 8 व्यवहार भाषा।

(सात काया के) 9 औदारिक, 10 औदारिक मिश्र, 11 वैक्रिय, 12 वैक्रिय मिश्र, 13 आहारक, 14 आहारक मिश्र और 15 कार्मण काय योग

(j) **दस प्राण के नाम लिखिए।**

उ- 1 श्रोत्रेन्द्रिय-बलप्राण, 2 चक्षुरिन्द्रिय -बलप्राण, 3 घ्राणेन्द्रिय -बलप्राण, 4 रसनेन्द्रिय -बलप्राण, 5स्पर्शनेन्द्रिय -बलप्राण, 6 मनोबलप्राण, 7 वचन--बलप्राण, 8 काय -बलप्राण,9 श्वासोच्छ्वास-बलप्राण, 10 आयुष्य-बलप्राण।

(k) **स्पर्शनेन्द्रिय के 8 विषय के 96 विकार लिखिए।**

उ- स्पर्शनेन्द्रिय के आठ विषय के 96 विकार- खुरदरा(ककर्श), कोमल (मधु), हल्का (लघु), भारी (गुरु),ठण्डा (शीत), गर्म (उष्ण), लुखा (रूक्ष)और चिकना (स्कन्ध)। ये 8 सचित्त, 8 अचित्त, 8 मिश्र, ये 24 शुभ और अशुभ, इन 48 पर राग और 48 पर द्वेष। इस प्रकार 96 विकार।

(l) **पंच दिव्य के नाम लिखिए।**

उ- पंच दिव्य- 1 स्वर्ण मुद्राओं की वर्षा, 2 पाँच रंग के अचित्त पुष्प, 3 दिव्य वस्त्र, 4 देवदुन्दुभियों का बजना, 5 आकाश में 'अहो दान' की घोषणा।

(m) **नित .....नैया तारी है। रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए-**

उ- नित नई बधाई सुने कान, लक्ष्मी वरमाला पहनाती।

'अशोक मुनि' जय विजय मिले, शांति प्रसन्नता बढ़ जाती।।

सम्मान मिले सत्कार मिले, भव जल से नैया तारी है।

(n) **मदिरा पान से होने वाली हानियाँ लिखिए।**

उ- मदिरापान-शराब मानव को मदहोश कर देती है। इसके पीने से बुद्धि नष्ट हो जाती है। अपने पराये का भान नहीं रहता। वाणी पर संयम नहीं रहता, धन नष्ट हो जाता है। शराब मानव को पशु जैसा बना देती है। जिसे इसकी एक बार आदत पड़ जाती है वह आसानी से छूटती नहीं है। इसकों पीने से घर के घर बरबाद हो जाते हैं। घर स्वर्ग की जगह शमशान बन जाते हैं, एक-एक दाने के लिए बच्चे तरस जाते हैं। शराब पीने से व्यक्ति को कई बीमारियाँ लग जाती हैं। गुर्दे खराब हो जाते हैं, पेट में फोड़े व जख्म बन जाते हैं। कभी-कभी तो हार्ट फेल भी हो जाता है।

कक्षा : प्रथम – जैन धर्म परिचय (परीक्षा 29 जुलाई, 2018)

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- **10x1 = (10)**

(a) जैन धर्म में देव कहते हैं-
(क) आचार्य को (ख)अरिहंतों को
(ग) उपाध्याय को (घ) साधुओं को (ख)

(b) रत्नत्रय की आराधना को सर्वाधिक महत्त्व देने वाला धर्म है-
(क) जैन धर्म (ख) बोद्ध धर्म
(ग) हिन्दू धर्म (घ) मुस्लिम धर्म (क)

(c) जैन धर्म की आधारशिला है-
(क) शारीरिक विजय (ख) मानसिक विजय
(ग) भौतिक विजय (घ) आध्यात्मिक विजय (घ)

(d) समभाव की साधना को कहते हैं-
(क) संवर (ख) प्रतिक्रमण
(ग) सामायिक (घ) पौषध (ग)

(e) दर्शन का भेद नहीं है-
(क) चक्षुदर्शन (ख) अचक्षुदर्शन
(ग) अवधि दर्शन (घ) मनो दर्शन (घ)

(f) सातवाँ बोल है-
(क) पर्याप्ति छह (ख) इन्द्रिय पाँच
(ग) शरीर पाँच (घ) जाति पाँच (ग)

(g) भगवान महावीर स्वामी की पुत्री का नाम था-
(क) मंगला (ख) सुन्दरा
(ग) प्रियदर्शना (घ) यशोदा (ग)

(h) 'महावीर स्तुति' के रचयिता हैं-
(क) केवल मुनि (ख) दर्शन मुनि
(ग) अशोक मुनि (घ) प्रमोद मुनि (ख)

(i) 21वें तीर्थंकर हैं-
(क) श्री पार्श्वनाथजी (ख) श्री अरिष्टनेमिजी
(ग) श्री नमिनाथजी (घ) श्री मुनिसुव्रतजी (ग)

(j) भगवती सूत्र में विनय के भेद बताये गये हैं-
(क) 08 (ख) 12
(ग) 07 (घ) 06 (ग)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- **10x1 = (10)**

(a) जैन धर्म व्यक्ति पूजक नहीं, गुणपूजक धर्म है। (हाँ)
(b) अनुकूल वस्तु पाकर प्रसन्न होना 'राग' कहलाता है। (हाँ)
(c) देव को प्रथम वन्दनीय कहा है। (नहीं)
(d) शब्द के अंत में अनुस्वार आने पर उसका उच्चारण 'म' होता है। (हाँ)
(e) 'करेमि भंते' के पाठ को सामायिक प्रतिज्ञा सूत्र भी कहते हैं। (हाँ)
(f) दसवाँ गुणस्थान सूक्ष्म सम्पराय है। (हाँ)
(g) स्पर्शनेन्द्रिय के 60 विकार होते हैं। (नहीं)
(h) छठा बोल शरीर पाँच नहीं है। (हाँ)
(i) भगवान महावीर ने 28 वर्ष की उम्र में दीक्षा ग्रहण की। (नहीं)
(j) 17वें तीर्थंकर श्री अरनाथजी है। (नहीं)

प्र.3 मुझे पहचानो :- **10x1 = (10)**

(a)	मेरा सामान्य अर्थ 'कत्तर्व्य' होता है।	धर्म
(b)	मेरे द्वारा व्यक्ति राग-द्वेष में सम रहना सीखता है।	सामायिक
(c)	मैं तीर्थंकरों की स्तुति का पाठ हूँ।	लोगस्स पाठ
(d)	मेरा अन्य नाम प्रणिपात सूत्र भी है।	नमोत्थुणं पाठ
(e)	सामायिक व्रत ग्रहण करते समय मेरा कायोत्सर्ग किया जाता है।	इच्छाकारेणं का पाठ
(f)	मैं पच्चीस बोल का नवाँ बोल हूँ।	उपयोग-12
(g)	मैं दसवें बोल का दूसरा कर्म हूँ।	दर्शनावरणीय
(h)	मैने साहरण की रात्रि में 14 शुभस्वप्न देखें।	माता त्रिशला
(i)	मैं 'नवकार मंत्र है महामंत्र' प्रार्थना का रचयिता हूँ।	श्री अशोक मुनि म.सा.
(j)	मैं मानव जीवन का भयंकर कोढ़ हूँ।	वैश्यागमन

प्र.4 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो पंक्तियों में दीजिए। **14x2 = (28)**

(a) देव कितने प्रकार के होते हैं ? नाम लिखिए।

उ. देव दो प्रकार के होते हैं- 1. सशरीरी अरिहंत देव 2. अशरीरी सिद्ध भगवन्त

(b) 'गुरु' का शाब्दिक अर्थ लिखिए।

उ. गुरु शब्द का शाब्दिक अर्थ है- बड़ा या भारी अर्थात् जो ज्ञानादि गुणों में एवं आचार में बड़ा हो, उसे गुरु कहते हैं।

(c) तीर्थंकर किसे कहते हैं ?

उ. चतुर्विध संघ रूप धर्म तीर्थ की स्थापना करने वाले केवलज्ञानी भगवन्तों को तीर्थंकर कहते हैं।

(d) प्राकृत भाषा में कौनसे अक्षर नहीं होते हैं ?

उ. प्राकृत भाषा में निम्न अक्षर नहीं होते हैं- ऐ, औ, ऋ, लृ, श, ष, क्ष, त्र, ज्ञ।

(e) सामायिक से सम्बन्धित मन के कोई चार दोषों के नाम लिखिए।

उ. नोट- इनमें से कोई चार

1. अविवेक दोष 2. यशोवांछा दोष 3. भय दोष 4. गर्व दोष
5. निदान दोष 6. लाभवांछा दोष 7. रोष दोष 8. संशय दोष
9. अविनय दोष 10. अबहुमान दोष

(f) कायोत्सर्ग शुद्वि का पाठ लिखिए।

उ. कायोत्सर्ग में आर्त्तध्यान, रौद्व ध्यान ध्याया हो, धर्म ध्यान, शुक्ल ध्यान न ध्याया हो।
कायोत्सर्ग में मन, वचन, काया चलायमान हुए हो, तो तस्स मिच्छामि दुक्कड़ं।

(g) सामायिक समाप्ति सूत्र के निम्न पाठांश को पूर्ण कीजिए-

उ. सामाइयं सम्मं काएणं, ण फसियं, ण पालियं, ण तीरियं, ण किट्टियं, ण सोहियं, ण आराहियं, आणाए अणुपालियं ण भवइ, तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।

(h) नौवें बोल के आधार पर पाँच ज्ञान के नाम लिखिए।

उ. 1. मतिज्ञान 2. श्रुत ज्ञान 3. अवधि ज्ञान 4. मनःपर्याय ज्ञान 5. केवलज्ञान

(i) चक्षुरिन्द्रिय के विषय तथा विकार समझाकर लिखिए।

उ. चक्षुरिन्द्रिय के पाँच विषय- काला, नीला, लाल, पीला, सफेद। ये 5 सचित्त, 5 अचित्त और 5 मिश्र। ये 15 शुभ और 15 अशुभ, इन 30 पर राग और 30 पर द्वेष। इस प्रकार 60 विकार।

(j) पच्चीस बोल का छठा बोल लिखिए।

उ. छठे बोल के प्राण दस- 1. श्रोत्रेन्द्रिय-बलप्राण, 2. चक्षुरिन्द्रिय-बलप्राण, 3. घ्राणेन्द्रिय-बलप्राण, 4. रसनेन्द्रिय-बलप्राण, 5.स्पर्शनेन्द्रिय-बलप्राण, 6. मनोबलप्राण, 7. वचन-बलप्राण, 8. काय-बलप्राण, 9. श्वासोच्छ्वास-बलप्राण, 10. आयुष्य-बलप्राण।

(k) भगवान महावीर का कितने दिन के तप का अभिग्रह कहाँ पर तथा किसके द्वारा पूर्ण हुआ ?

भगवान महावीर का पाँच माह पच्चीस दिन के तप का अभिग्रह कोशाम्बी नगरी में राजकुमारी चन्दना द्वारा भिक्षा देने से पूर्ण हुआ।

(l) प्रार्थना को पूर्ण करके लिखिए-

उ. जो पाप मिटाने आया था, जिस भारत आन जगाया था।
उस त्रिशला नन्दन ज्ञानी को।।

(m) अभिगम किसे कहते हैं ?

उ. अभिगम अर्थात भगवान के समवसरण में या साधु-साध्वी के उपाश्रय (स्थानक) में जाते समय पालने योग्य नियम।

(n) ज्ञान-विनय किसे कहते हैं ?

उ. श्रद्धापूर्वक जैनागमों का स्वाध्याय एवं चिन्तन-मनन करना 'ज्ञान-विनय' है।

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर तीन-चार पंक्तियों में लिखिए : - **14x3=(42)**

(a) क्या अरिहन्त हमें सुखी व दु:खी बना सकते हैं ?

उ. अरिहन्त हमें सुखी व दु:खी नहीं बना सकते हैं, लेकिन वीतराग प्रभु की साधना से, भक्ति से हमारे विकार (राग-द्वेष) कम होते हैं, जिससे हम स्वतः सुख व शांति का अनुभव करते हैं।

(b) श्रद्धा एवं पालन करने की अपेक्षा से जैन के तीन प्रकार लिखिए।

उ. 1. जिन वचनों पर श्रद्धा रखने वाले।
2. श्रद्धा के साथ आंशिक नियमों का पालन करने वाले।
3. श्रद्धा के साथ पूर्ण चारित्र का पालन करने वाले।

(c) अरिहन्त व सिद्ध में क्या-क्या भेद हैं ?

उ. 1. अरिहन्त भगवान सशरीरी होते हैं, जबकि सिद्ध अशरीरी होते हैं।
2. अरिहन्तों ने चार घाती कर्म क्षय किये हैं, जबकि सिद्धों ने आठों ही कर्म क्षय कर दिये हैं।
3. अरिहन्त भगवान धर्म का उपदेश देते हैं, मोक्ष का मार्ग बतलाते हैं तथा सिद्धों का स्वरूप बताते हैं, जबकि सिद्ध अशरीरी होने से ऐसी कोई प्रवृत्ति नहीं करते हैं।

(d) शुद्ध उच्चारण क्यों आवश्यक है ?

उ. 1. अशुद्ध उच्चारण करने से शब्द का अर्थ बदल जाता है।
2. अशुद्ध उच्चारण करने से ज्ञान का अतिचार (दोष)लगता है।

(e) सामायिक का प्रमुख उद्देश्य क्या है ?

उ. सामायिक का प्रमुख उद्देश्य प्रिय-अप्रिय, निंदा-विकथा, सत्कार-तिरस्कार, हानि-लाभ, जीवन-मरण, शत्रु-मित्र इत्यादि विविध अवस्थाओं में शांत चित्त रहने की क्षमता का विकास करना है।

(f) ''लोगहियाणं .....धम्मसारहीणं। उक्त पाठ को पूर्ण करके लिखिए।

उ. लोगहियाणं, लोगपईवाणं, लोगपज्जोअगराणं, अभयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं, सरणदयाणं, जीवदयाणं, बोहिदयाणं, धम्मदयाणं, धम्मदेसयाणं, धम्मनायगाणं।

(g) वचन के दस दोषों के नाम लिखिए।

उ. 1. कुवचन दोष 2. सहसाकार दोष 3. स्वच्छन्द दोष 4. संक्षेप दोष
5. कलह दोष 6. विकथा दोष 7. हास्य दोष 8. अशुद्ध दोष
9. निरपेक्ष दोष 10. मुम्मण दोष।

(h) आठवें बोल में काया के योगों के नाम लिखिए।

उ. 1. औदारिक 2. औदारिक मिश्र 3. वैक्रिय 4. वैक्रिय मिश्र
5. आहारक 6. आहारक मिश्र 7. कार्मण काय योग।

(i) घ्राणेन्द्रिय के विषय एवं विकार लिखिए।

उ. घ्राणेन्द्रिय के दो विषय के 12 विकार इस प्रकार है- सुरभिगन्ध और दुरभिगन्ध। ये 2 सचित्त, 2

अचित्त और 2 मिश्र। इन पर 6 पर राग और 6 पर द्वेष। इस प्रकार 12 विकार।

(j) भगवान महावीर की जीवनी से मिलने वाली कोई तीन शिक्षाएँ लिखिए।

उ. 1. कर्म किसी को भी नहीं छोड़ते, ऐसा समझकर कर्म बांधने से भय रखें।
2. तीर्थंकर स्वयं गृह त्याग कर साधु धर्म स्वीकारते हैं तो फिर बिना धर्म करणी किये हमारा कल्याण कैसे होगा ।
3. भगवान ने जब इतनी उग्र तपस्या की तो हमें भी शक्ति अनुसार तपस्या करनी चाहिए।
4. भगवान ने सामने जाकर उपसर्ग सहे तो कम से कम हमें अपने सामने आये हुए उपसर्गों को समता से सहन करने चाहिए।

(k) ''श्रीपाल.....मंगलकारी हो।'' उक्त प्रार्थना को पूर्ण कीजिए।

उ. श्रीपाल सुदर्शन मयणरेहा, जिसने भी जपा आनन्द पाया।
जीवन के सूने पतझड़ में, फिर फूल खिले सौरभ छाया।
मन नन्दन वन में रमण करें, यह ऐसा मंगलकारी।।

(l) ''हो लाख.....गामी की।'' उक्त प्रार्थना को पूर्ण कीजिए।
हो लाख बार प्रणाम तुम्हें, हे वीर प्रभु! भगवान तुम्हें।
मुनि दर्शन मुक्ति-गामी की।

(m) व्यक्ति किन-किन कारणों से शिकार करता है ? उल्लेख कीजिए।
व्यक्ति अनेक कारणों से शिकार करता है- 1. मनोविनोद के लिये। 2. साहस प्रदर्शन के लिये। 3. कुसंग के कारण। 4. धन प्राप्ति के लिये। 5. फैशन परस्ती के लिये। 6. घर को सजाने के लिये।

(n) विनय का महत्त्व तीन-चार पंक्तियों में लिखिए।
विनीत शिष्य से गुरु तथा विनीत पुत्र से माता-पिता सदैव प्रसन्न रहते हैं। विनीत व्यक्ति समाज, धर्मस्थान एवं अन्य सभी स्थानों पर सम्मान का अधिकारी होता है। विनय जिनशासन का मूल है। विनीत व्यक्ति ही संयती हो सकता है। विनय मोक्ष-मार्ग का प्रथम सोपान है। विनय समस्त सद्‌गुणों का मूल है।

कक्षा : प्रथम – जैन धर्म परिचय (परीक्षा 21 जुलाई, 2019)

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- **10x1 = (10)**

(a) जिन के उपासक कहलाते हैं-
(क) जैन (ख) वीतराग
(ग) श्रमण (घ) तीर्थंकर (क)

(b) वचन के दोष हैं-
(क) रोष (ख) वैयावृत्य
(ग) संक्षेप (घ) संशय (ग)

(c) चौथी पर्याप्ति है-
(क) शरीर (ख) श्वासोच्छ्वास
(ग) मन (घ) इन्द्रिय (ख)

(d) प्रभु महावीर ने दीक्षा से पूर्व प्रतिदिन कितनी स्वर्ण मुद्राओं का दान दिया-
(क) 1 करोड़ 80 लाख (ख) 1 लाख 80 हजार
(ग) 1 करोड़ 8 लाख (घ) 1 लाख 8 हजार (ग)

(e) 17वें तीर्थंकर हैं-
(क) धर्मनाथजी (ख) अरनाथजी
(ग) मुनिसुव्रतजी (घ) कुंथुनाथजी (घ)

(f) धर्म का मूल है-
(क) विनय (ख) क्षमा
(ग) सत्य (घ) अहिंसा (क)

(g) मानव जीवन का भयंकर कोढ़ क्या है-
(क) शिकार (ख) वैश्यागमन
(ग) मांसभक्षण (घ) मदिरापान (ख)

(h) साधु-साध्वी के उपाश्रय में जाते वक्त पालने योग्य नियम कहलाते हैं-
(क) त्याग (ख) प्रत्याख्यान
(ग) व्रत (घ) अभिगम (घ)

(i) रसनेन्द्रिय के विकार हैं-
(क) 96 (ख) 12
(ग) 20 (घ) 60 (घ)

(j) शब्द के बीच में आधा अक्षर आने पर जोर देकर बोला जाता है-
(क) पहले वाले अक्षर पर (ख) बाद वाले अक्षर पर
(ग) आधे पर अक्षर पर (घ) इनमें से कोई नहीं (क)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- **10x1 = (10)**

(a) मनुष्य का अहंकार ही उसे दुःख देता है। (हाँ)
(b) स्मगलिंग का धंधा करना जुआ है। (नहीं)
(c) वैकिय मिश्र शरीर का भेद है। (नहीं)
(d) शब्द के अंत में अनुस्वार आने पर अनुस्वार का उच्चारण 'म्' होता है। (हाँ)
(e) महाव्रत या अणुव्रत का पालन करना चारित्र है। (हाँ)
(f) जन्म-मरण के भव बन्धनों को समाप्त करने का उपाय गुरु ही बतलाते हैं। (नहीं)
(g) भगवान महावीर ने जाति-पाँति एवं लिंग के भेदभाव को मिटाने हेतु उपदेश दिये। (हाँ)
(h) घ्राणेन्द्रिय के 12 विकार होते हैं। (हाँ)
(i) भगवान महावीर के 3,18000 श्रावक थें। (नहीं)
(j) विनीत व्यक्ति ही संयमी हो सकता है। (हाँ)

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से सही जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्तस्थान में लिखिए:- **10x1=(10)**

(a)	लोगस्स	(अ) जुआ	उक्कित्तणं
(b)	भय	(ब) गुरु	मन का दोष
(c)	मल	(स) उक्कित्तणं	काया का दोष
(d)	शतरंज	(द) शरीर	जुआ
(e)	चालू टार्च	(य) व्यसन	सचित्त का त्याग
(f)	तस्सउत्तरी	(र) धर्म	उत्तरीकरण
(g)	तैजस	(ल) मन का दोष	शरीर
(h)	कर्त्तव्य	(व) सचित्त का त्याग	धर्म
(i)	भारी	(श) काया का दोष	गुरु
(j)	कुटेव	(ष) उत्तरीकरण	व्यसन

प्र.4 मुझे पहचानो :- **10x1=(10)**

(a)	मेरा घर-भर में शासन चलता है।	नम्र स्त्री
(b)	मैं पहले सुखद, आकर्षक एवं लुभावना लगता हूँ।	वैश्यागमन
(c)	मैं मोक्ष मार्ग का प्रथम सोपान हूँ।	विनय
(d)	हम स्वयं गृह त्यागकर साधु धर्म स्वीकारते हैं।	तीर्थंकर
(e)	मेरी अशुद्ध स्थिति संसार है।	आत्मा
(f)	मैं प्रत्यक्ष उपकारी होने से सर्वप्रथम मुझे नमस्कार किया गया है।	अरिहंत
(g)	मेरी साधना बड़ी कठोर है।	जैन साधु
(h)	मेरे आठ विषय हैं।	स्पर्शनेन्द्रिय
(i)	मेरे सेवन से गुर्दे खराब हो जाते हैं।	शराब
(j)	मैने आज जीव हिंसा को प्रोत्साहन दिया है।	फैशन

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो पंक्तियों में दीजिए- (नोटः- कोई 12) **12x2=(24)**

(a) श्रद्धा एवं पालन की अपेक्षा से जैन के कौन-कौन से प्रकार होते हैं ?

उ. जैन तीन प्रकार के होते हैं-1. जिन वचनों पर श्रद्धा रखने वाले; 2. श्रद्धा के साथ आंशिक नियमों का पालन करने वाले; एवं 3. श्रद्धा के साथ पूर्ण चारित्र का पालन करने वाले।

(b) अरिहंत ने कौनसे कर्मों का क्षय किया है ?

उ. अरिहंत ने ज्ञानावरणीय; दर्शनावरणीय, मोहनीय एवं अन्तराय इन चार घाती कर्मो का क्षय कर दिया।

(c) 9वें, 13वें, 19वें एवं 22वें तीर्थंकर का नाम लिखिए।

उ. 9वें-सुविधिनाथजी, 13वें-विमलनाथजी, 19वें-मल्लिनाथजी, 22वें-अरिष्टनेमिजी

(d) चोरी किस-किस रूप में होती है ?

उ. सेंध आदि लगाकर, जेब काटकर, रास्ते में चलते हुए को लूटना, स्मगलिंग का धंधा करना चोरी के रूप हैं।

(e) सामायिक सम्बन्धी काया के कोई चार दोषों के नाम लिखिए।

उ. 1. कुआसन दोष, 2. चलासन दोष, 3. चलदृष्टि दोष, 4. सावद्य-क्रिया दोष, 5. आलम्बन दोष, 6. आकुंचन प्रसारण दोष, 7. आलस्य दोष, 8. मोटन दोष, 9. मल दोष, 10. विमासन दोष, 11. निद्रा दोष, 12. वैयावृत्त्य दोष

(f) सामायिक प्रतिज्ञा सूत्र का पाठ लिखिए।

उ. करेमि भंते! सामाइयं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि। जावनियमं पज्जुवासामि दुविहं तिविहेणं ण करेमि, ण कारवेमि, मणसा, वयसा, कायसा, तस्स भंते! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि।

(g) रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए-

उ. सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल सिज्जंस वासुपुज्जं च। विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि।।

(h) ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए।।

(i) 25 बोलों में से तीसरा बोल लिखिए।

उ. तीसरे बोल काय छह-1. पृथ्वीकाय, 2. अप्काय, 3. तैजसकाय (तेऊकाय), 4. वायुकाय, 5. वनस्पतिकाय, 6. त्रसकाय।

(j) अनुस्वार के बाद में निम्न अक्षरों के होने पर अनुस्वार का उच्चारण क्या होता है-

उ. (क) व होने पर- म् (ख) ह होने पर- ङ्.
(ग) ड होने पर- ण् (घ) त्र होने पर- न्

(k) उत्तरासंग धारण का अर्थ क्या है ?

उ. उत्तरासंग धारण-मुँहपत्ति या रूमाल मुँह के ऊपर रखना। देव, गुरु के समक्ष खुले मुँह से नहीं बोलना।

(l) प्रार्थना में से पूर्ण करके लिखिए-

उ. जिस जगती का उद्धार किया, जो आया शरण उसे पार किया। जिस पीड़ सुनी हर प्राणी की।

(m) दुःखों के मूल कारण क्या हैं और उन कारणों का नाश किससे संभव है ?

उ. दुःखों का मूल कारण मोह व अज्ञान है। मोह व अज्ञान का नाश-सम्यग्ज्ञान, सम्यग्दर्शन व सम्यग्चारित्र से संभव है।.

(n) विनयशीलता के प्रथम दो लक्षण लिखिए।

उ. 1. इंगित व हाव-भाव से बड़ों के भावों को समझता है। 2. सदैव गुरुजनों के समीप रहता है।

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर तीन-चार पंक्तियों में लिखिए : - कोई बारह **12x3=(36)**

(a) जैन धर्म का पालन कौन-कौन कर सकते हैं ?

उ. जो भव्य आत्मा, आत्मा के स्वरूप को समझ ले तथा चेतन व जड़ का भेद कर सकने में समर्थ हो, वहीं व्यक्ति जैन-धर्म का पालन कर सकता है। जैन धर्म के पालन हेतु जाति, सम्प्रदाय, देश आदि का प्रतिबन्ध नहीं है।

(b) सच्चा गुरु किसे कहते हैं?

उ. जो धन-दौलत का त्यागी हो, सांसारिक प्रपंचों से रहित हो, अहिंसादि पंच महाव्रतों का दृढ़ता से पालन करता हो तथा आत्मा से परमात्मा बनने के आदर्श को सामने रखकर आत्म-साधना करता हो, बिना किसी लोभ-लालच के जन-कल्याण की भावना से उपदेश देता हो, उसे सच्चा गुरु कहते हैं।

(c) सामायिक पारने की विधि लिखिए।

उ. (1) नवकार मंत्र-एक बार (2) आलोचना सूत्र (इच्छाकारेणं का पाठ)-एक बार (3) उत्तरीकरण सूत्र (तस्सउत्तरी का पाठ)-एक बार (4) मन में एक उत्कीर्त्तन सूत्र (लोगस्स का पाठ) का काउस्सग्ग करें। (5) 'णमो अरिहंताणं प्रकट में बोले। (6) कायोत्सर्ग-शुद्धि का पाठ-एक बार (7) उत्कीर्त्तण सूत्र (लोगस्स का पाठ)-एक बार (8) शक्रस्तव-प्रणिपात सूत्र (णमोत्थु णं का पाठ)-दो बार (9) समाप्ति सूत्र (एयस्स नवमस्स)-एक बार (10) नवकार मंत्र-तीन बार

(d) कुव्यसन-त्याग से क्या-क्या लाभ हैं ?

उ. कुव्यसनों का त्याग करने से जीवन निर्मल और पवित्र बनता है, जीवन में सर्वांगीण विकास की संभावना बनती है तथा व्यक्ति अनेक खतरों से बच जाता है।

(e) सामायिक में क्या-क्या कार्य करने चाहिए ?

उ. सामायिक में गृहस्थ का वेश उतारकर बिना सिले शुद्ध श्वेत वस्त्र धारण करने चाहिए तथा

सामायिक काल में चिन्तन-ध्यान के साथ-साथ जीवनोपयोगी पुस्तकों का स्वाध्याय करना चाहिए।

(f) गमणागमणे.....उद्दविया। उक्त पाठ को पूर्ण करके लिखिए।

उ. गमणागमण...पाणक्कमणे, बीयक्कमणे, हरियक्कमणे, ओसा उत्तिंग पणग दग मट्टी मक्कडा संताणा संकमणे, जे मे जीवा विराहिया, एगिंदिया, बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिंदिया, अभिहया, वत्तिया, लेसिया, संघाइया, संघट्टिया, परियाविया, किलामिया, उद्दविया।

(g) बाल गंगाधर तिलक ने विनय के सम्बन्ध में क्या कहा है ?

उ. नम्रता, प्रेमपूर्ण व्यवहार और सहनशीलता से मनुष्य तो क्या पशुपक्षी भी आपके वश में हो जाते हैं। सचमुच विनय एक वशीकरण मंत्र है, जिससे शत्रु भी मित्र बन जाते हैं।

(h) अंतिम सात गुणस्थानों के नाम लिखिए।

उ. 7. अप्रमादी, साधु गुणस्थान, 8. निवृत्ति बादर गुणस्थान, 9. अनिवृत्ति बादर गुणस्थान, 10. सूक्ष्म सम्पराय गुणस्थान, 11. उपशान्त मोहनीय गुणस्थान, 12. क्षीण मोहनीय गुणस्थान, 13. सयोगी केवली गुणस्थान और 14. अयोगी केवली गुणस्थान।

(i) 25 बोलों में से छठा बोल लिखिए।

उ. छठे बोले प्राण दस-1. श्रोत्रेन्द्रिय-बलप्राण, 2. चक्षुरिन्द्रिय-बालप्राण, 3. घ्राणेन्द्रिय-बालप्राण, 4. रसनेन्द्रिय-बलप्राण, 5. स्पर्शनेन्द्रिय-बलप्राण, 6. मनोबलप्राण, 7. वचन-बलप्राण, 8. काय-बलप्राण, 9. श्वासोच्छ्वास-बलप्राण, 10. आयुष्य-बलप्राण।

(j) भगवान महावीर को केवल ज्ञान-केवल दर्शन की उपलब्धि कब और कहाँ हुई ?

उ. साढ़े बारह वर्ष की अपूर्व साधना के पश्चात, प्रभु महावीर को जृंभिकाग्राम नगर के बाहर, ऋजुबालुका नदी के किनारे, श्यामाक गाथापति के खेत में, शाल वृक्ष के नीचे गोदोहिका आसन में छट्ठं भक्त (बेले) की निर्जल तपस्या में वैशाख शुक्ला दसमी के दिन, पिछले प्रहर में केवल ज्ञान-केवल दर्शन की उपलब्धि हुई।

(k) ''नित नई.....तारी है।'' उक्त प्रार्थना को पूर्ण कीजिए।

उ. नित नई बधाई सुने कान, लक्ष्मी वरमाला पहनाती।
'अशोक मुनि' जय विजय मिले, शान्ति प्रसन्नता बढ़ जाती।।
सम्मान मिले सत्कार मिले, भव जल से नैया तारी है।।

(l) मन के दोषों के नाम लिखिए।

उ. मन के दस दोष-1. अविवेक दोष, 2. यशेवांछा दोष, 3. लाभ वांछा दोष, 4. गर्व दोष, 5. भय दोष, 6. निदान दोष, 7. संशय दोष, 8. रोष दोष, 9. अविनय दोष, 10 अबहुमान-दोष

(m) नवकार मंत्र में पहले अरिहंतों को नमस्कार क्यों किया गया है ?

उ. अरिहन्त भगवान् चतुर्विध संघ रूप धर्म को प्रकट कर मोक्ष की राह दिखाने वाले और सिद्धों का स्वरूप बतलाने वाले होने से महान् उपकारी हैं। जन्म-मरण के भव-बन्धनों को समाप्त करने का उपाय अरिहन्त भगवान् ही बतलाते हैं, अतः नमस्कार मंत्र में सर्वप्रथम अरिहन्तों को नमस्कार किया गया है।

(n) संसारी देवता हमारे आर्दश क्यों नहीं हो सकते हैं ?

उ. जैन धर्म संसार के क्रोधी, मानी, मायावी और लोभी देवताओं को अपना इष्ट देव नहीं मानता। क्योंकि जो स्वयं विकार ग्रस्त हैं, वे हमें क्या विकार रहित बना सकेंगे? जो अपनी रक्षा के लिये अस्त्र-शस्त्र रखते हों, जो काम के वशीभूत होकर स्त्री का संग करते हों, वे हमारे आदर्श नहीं हो सकते।